श्यामाचरण दुबे (एस.सी. दुबे) 1922-1996

एस.सी. दुबे के लेखन के प्रमुख विषय ग्राम्य जीवन, समुदायिक विकास, आधुनिकीकरण, परिवर्तन और परंपरा का प्रबंधन तथा विकास से जुड़े कई गूढ़ विषय रहे हैं।

एस.सी. दुबे "इंडियन विलेज" (भारतीय ग्राम) पुस्तक में अंतर अनुशासन पद्धति का प्रयोग किया है जिसमें तेलंगाना के एक गांव शमीरपेट से संबंधित तथ्य हैं।

एस.सी. दुबे ने मध्य प्रदेश की झूम खेती करने वाली "कमार" जनजाति की समाजशास्त्रीय और मानवशास्त्रीय अध्ययन किया है।

एस.सी. दुबे ने लिखा है कि भारत में कोई भी गांव स्वायत्त और स्वाबलंबी नहीं है , क्योंकि वह हमेशा वृहत सामाजिक व्यवस्था की एक इकाई होता है। वह एक संगठित राजनीतिक समाज का एक भाग होता है ।

एस.सी. दुबे ने लिखा है कि एक व्यक्ति गांव समुदाय का सदस्य ही नहीं वरन वह एक जाति व एक धार्मिक समूह या जनजाति से बना होता है।

एस.सी. दुबे ने लिखा है कि भारत के गांव में तीन प्रकार के धर्म / पर्व एवं उत्सव मनाया जाते हैं-

(1)पारिवारिक संस्कार

(2)धार्मिक उत्सव

(3) जाति के उत्सव

एस.सी. दुबे का कहना है कि मुसलमानों के अपने पारिवारिक और सामुदायिक त्यौहार होते हैं।

जाति के संदर्भ में दुबे का मत है कि सांस्कारिक पवित्रता और पवित्रता की धारणा जाति पदक्रम के बुनियादी सिद्धांत हैं।

एस.सी. दुबे की मान्यता है कि गांव में जाति पद क्रम का मुख्य आधार सांस्कारिक है न कि आर्थिक।

"प्रभु जाति" की अवधारणा एम.एन. श्रीनिवास ने प्रस्तुत की है।

एस.सी. दुबे ने लिखा है आधुनिकीकरण एक प्रक्रिया या बहाव है जो परंपरागत और अर्द्ध-परंपरागत व्यवस्था से एक प्रकार की अपेक्षित प्रौद्योगिकी और इससे जुड़ी हुई सामाजिक संरचना मूल्य अनुस्थापन प्रेरणाओं/ मानदंडों की ओर चलता है।

एस.सी. दुबे ने 6 कार्यशील परंपराओं का उल्लेख किया है -

(१) पौराणिक परंपरा (पौराणिक)

(२) राष्ट्रीय परंपरा (उभरती हुई)

(३) स्थानीय परंपरा

(४) पश्चिमी परंपरा

(५) स्थानीय उपसांस्कृतिक परंपरा

(६) प्रादेशिक परंपरा।

एस.सी. दुबे ने लिखा है कि राजनीतिक शक्ति जाति में नहीं होती है, वरन गांव के कुछ व्यक्तियों में निहित होती है ।

युवा असंतोष के संदर्भ में दुबे विद्यालयीय व्यवस्था की खामी मानते हैं।

एस.सी. दुबे पृष्ठभूमि, संस्कार और अभिवृत्तियों के आधार भारतीय युवाओं की चार उप संस्कृतियां बताई हैं।

(१) हिप्पियों का भारतीय संस्करण

(२) पश्चिमी परक और अलगाव ग्रस्त परिवारों से आए युवा

(३) निम्न तबके तथा मध्यम वर्ग के युवा

(४) प्रथम पीढ़ी के शिक्षित युवा वर्ग (माता पिता / उच्च शिक्षा से वंचित रहे)।

एस.सी. दुबे ने आधुनिकीकरण को परिभाषित करते हुए लिखा है की यह मूलतः एक प्रक्रिया, एक गति या बहाव है, जो परंपरागत या अर्द्धपरंपरागत व्यवस्था से एक विशेष प्रकार की अपेक्षित प्रौद्योगिकी और इससे जुड़ी हुई सामाजिक संरचना मूल्य अनुष्ठान प्रेरणाओं और मानदंडों की ओर चलता है।

एस.सी. दुबे की प्रमुख कृतियां :-

1- दी कमार , 1954

2-इंडियन विलेज ,1955
3-इंडियाज चैंजिंग विलेज ,1958
4-पावर एंड कनफ्लिक्ट इन विलेज इंडिया, 1956
5- एसेज ऑन मॉर्डनाइजेशन ,1971
6- एक्सप्लेनेशन एंड मैनेजमेंट आफ चैंज ,1971
7- कंटेंपरेरी इंडिया एंड इट्स मॉडर्नाइजेशन ,1973
8- ट्राईबल हेरिटेज ऑफ इंडिया, 1977
9- सोशल साइंसेज इन चैंजिंग सोसाइटी 1974
10- मॉडर्नाइजेशन एंड डेवलपमेंट, 1988
11-ऑन क्राइसिस एंड कमिटमेंट इन सोशल वैल्यूज .
12-इंडियन सोसाइटी ,1992
13-मानव और संस्कृति
14-भारतीय ग्राम विकास का समाजशास्त्र
15- समय और संस्कृति
16-संक्रमण की पीड़ा
17- परंपरा और इतिहास बोध
18- संस्कृति और शिक्षा
19 समाज और भविष्य।

एस.सी.दुबे ने तत्कालीन आन्ध्र प्रदेश को "शमीरपेट" गांव के अध्ययन को अपनी पुस्तक "इण्डियन विलेज" के आधार पर भारतीय गांव की सामान्यता के बारे में लिखा कि भारत में कोई भी गांव स्वायत्त और स्वावलंबी नहीं है क्योंकि वह हमेशा वृहत सामाजिक व्यवस्था की एक इकाई होता है। वह एक संगठित राजनीतिक समाज का एक हिस्सा होता है, एक व्यक्ति एक गांव के समुदाय का ही सदस्य नहीं होता है , अपितु वह एक जाति धार्मिक समूह या एक जनजाति से भी जुड़ा होता है जो कई गांवो में फैली होती हैं। इन इकाइयों के अपने संगठन सत्ता और नियमाचार (दंड व्यवस्था) होते हैं।
एस.सी.दुबे का यह अध्ययन भारत में ग्रामीण संस्थाओं के परिचालन और क्रियाकलापों पर भी प्रकाश डालता है। दुबे ने लिखा है कि ग्रामीण भारत की आर्थिक व्यवस्था मुख्यतः जाति आधारित प्रकार्यात्मक विशेषीकरण अंतर-निर्भरता और व्यावसायिक गतिशीलता से परिचालित होती है। उन्होंने ग्रामीण लोगों की विश्व दृष्टि अंतर सामूहिक संबंधों अंतर्जातीय मनोभावनाओं, रूढ़ि, धारणाओं जैसे विषयों पर भी टिप्पणियां की हैं। दुबे ने ग्रामीण लोगों की जीवन चक्र की तीन प्रमुख अवस्थाओं, जैसे- बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों का भी इसमें सूक्ष्म विश्लेषण किया है।

भारत में गांव में धर्म के प्रतिमान विशेषतया हिंदू धर्म की संस्थाओं का विवेचन करते हुए दुबे लिखते हैं कि शास्त्रीय (पौराणिक) हिंदू धर्म के जो तत्व समस्त भारत में फैले हुए हैं, वे प्रादेशिक और क्षेत्रीय हिंदू धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं से घुल मिल गए हैं। इस आधार पर भारत के गांव में तीन प्रमुख प्रकार के धार्मिक पर्व, त्यौहार और उत्सव मनाय जाते हैं:- (१) पारिवारिक संस्कार, (२) गांव के त्यौहार और (३) जाति के उत्सव। मुसलमानो के अपने पारिवारिक और सामुदायिक त्यौहार होते हैं और गांव में हिंदू और मुसलमान एक दूसरे के त्यौहारों में आपस में मिलते-जुलते और शिरकत भी करते देखे गए हैं।

एस.सी.दुबे ने अपनी पुस्तक इंडियन विलेज में जाति पदक्रम (कास्ट रैंकिंग) प्रभु जाति, ग्रामीण नेतृत्व, भारत में परिवर्तन की प्रवृत्तियां, संस्कृति और आधुनिक विकास, आधुनिकीकरण, अपसंस्कृति, भारतीय युवा संस्कृति, विद्यार्थी असंतोष जैसे अनेक समाजशास्त्रीय विषयों पर देश की ज्वलंत समस्याओं पर प्रकाश डाला है। दुबे ने जाति पदक्रम से जुड़े सांस्कारिक पवित्रता और अपवित्रता की धारणाएं, जाति पदक्रम की बुनियादी सिद्धांत हैं । रोजमर्रा के धार्मिक कर्मकांड, भोजन संबंधी निषेध, पेशों का संस्तरण तथा जीवन चक्र संबंधित संस्कारों के नियमाचारों और प्रथाओं का पालन आदि समाज में जाति पदक्रम को निश्चित करते हैं। "गांव में जाति पदक्रम का मुख्य मापदंड सांस्कारिक ;है न की आर्थिक।"

एस.सी. दुबे ने अपने गांव के अध्ययन में एम.एन. श्रीनिवास की प्रमुख अवधारणा "प्रभु जाति" पर टिप्पणी करते हुए अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा कि राजनीतिक शक्ति संपूर्ण जाति में निहित नहीं होती है, अपितु यह शक्ति जाति के कुछ लोगों में केंद्रित होती है। प्रत्येक गांव में कुछ ऐसे प्रबल व्यक्ति होते हैं जिनकी गांव के संचालन में निर्णायक भूमिका होती है। ये व्यक्ति ही गांव की राजनीतिक गतिविधियों को संचालित करते, झगड़ों को निपटाने, युवाओं का मार्गदर्शन करने, गांव में तीज-त्यौहार संबंधी उत्सव को मनाने और गांव में संगठन बनाए रखने में मुख्य भूमिका अदा करते हैं।

एस.सी. दुबे ने आधुनिकीकरण संबंधी विचारों को देते हुए लिखा है कि "यह मूलत: एक प्रक्रिया, एक गति या बहाव है जो परंपरागत या अर्द्ध परंपरागत व्यवस्था से एक विशेष प्रकार की अपेक्षित प्रौद्योगिकी और इससे जुड़ी हुई सामाजिक संरचना, मूल्य अनुस्थापन ,प्रेरणाओं और मापदंडों की ओर चलता है।" उन्होंने आधुनिकता को विशेषताएं बताई हैं:- परानुभूति, मानसिक गतिशीलता, उच्च सहभागिता, स्पष्ट लक्ष्य, हितों का समन्वय, संस्थागत राजनैतिक प्रतिस्पर्धा, अर्जन अभिप्रेरणा, तार्किक आधार पर लक्ष्य एवं साधनों का आकलन, आकलन धर्म, कार्य, बचत और जौखिम उठाने के प्रति नवीन दृष्टि, परिवर्तन की वांछनीयता, संभावना में विश्वास, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अनुशासन, उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी, उच्च स्तरीय जटिल संस्थाएं और विशाल स्तर पर शिक्षा आदि।